मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के प्रेमचंद आर्काइव्स और लिटरेरी सेंटर, जामिया ने IX मुंशी प्रेमचंद स्मृति व्याख्यान का किया आयोजन

नई दिल्ली, 12 फरवरी, 2026

जामिया के प्रेमचंद आर्काइव्स और लिटरेरी सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया (JMI) ने मंगलवार, 10 फरवरी 2026 को IX मुंशी प्रेमचंद स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष, प्रो. सगीर अफराहीम ने दिया और जेएमआई के माननीय वाइस चांसलर, प्रो. मजहर आसिफ़ ने इसकी अध्यक्षता की।

अपने संबोधन में, प्रो. आसिफ़ ने साहित्य के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद के योगदान और आज के समय में उनकी कहानियों और लेखन की अहमियत पर रोशनी डाली। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद अपनी रिसर्च और लेखन के लिए "टीचर्स, स्टूडेंट्स और स्कॉलर्स के लिए एक पथप्रदर्शक" बने हुए हैं। उन्होंने ऑडियंस को प्रेमचंद और कबीर दोनों के योगदान और काम के बारे में याद दिलाया, जिनके बारे में प्रो. आसिफ ने कहा कि वे "इंडियन लिटरेचर की कीमती और अनमोल धरोहर हैं"। प्रो. आसिफ़ ने जामिया के प्रेमचंद आर्काइव्स को हर मुमकिन इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट का भी भरोसा दिलाया।

प्रो. सगीर अफराहीम, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष, एक जाने-माने लेखक, क्रिटिक और फिक्शन नॉवेलिस्ट, ने प्रेमचंद को एक ऐसे पाथफाइंडर (नकीब) के तौर पर रखा जिन्होंने उर्दू/ हिंदी लिटरेचर को ग्रामीण भारतीय जीवन की कठोर सच्चाइयों से जोड़कर बदल दिया। व्याख्यान में प्रेमचंद के फिक्शन की रेलिवेंस और ह्यूमन इंपॉर्टेंस (मन्वियत) के उनके क्रिटिकल एनालिसिस का भरपूर ज़िक्र किया गया। उन्होंने कहा, "एथिकल ह्यूमैनिज्म: "मन्वियत" (महत्व/मतलब) प्रेमचंद के नैतिक टकरावों को दिखाने में है, खासकर यह कि कैसे किरदार गरीबी, कॉलोनियल ज़ुल्म और सोशल हायरार्की के दबाव में अपनी इंसानियत बनाए रखते हैं।" उन्होंने इस बारे में बात की कि साहित्य का उद्देश्य साहित्य का उद्देश्य (साहित्य का उद्देश्य) में प्रेमचंद के अपने दर्शन से कैसे मेल खाता है, जो तर्क देता है कि साहित्य सामाजिक जागृति और सुधार का एक माध्यम होना चाहिए। सगीर अफराहीम के साहित्यिक शोध के आधार पर, विशेष रूप से उनके काम प्रेमचंद: एक नकीब (1987) और प्रेमचंद की तखलीकत का मरूज़ी मुताला (2017) में, प्रेमचंद के कथा साहित्य में "मानवता" या मानवतावादी सार (मानवता / इंसानियत) को यथार्थवाद और सामाजिक सहानुभूति के प्रति गहन प्रतिबद्धता के रूप में दोहराया गया था। प्रेमचंद के कथा साहित्य में मानवतावादी पहलू, उनके विश्लेषण के अनुसार, जैसा कि उन्होंने अपनी बातचीत में कहा, में जाति-विरोधी भावना, महिलाओं का सशक्तीकरण और किसान संघर्ष शामिल हैं: जमींदारों और औपनिवेशिक व्यवस्था (जैसे, गोदान) के खिलाफ किसानों के संघर्षों का वर्णन। प्रो. आई एम खान, डीन, फैकल्टी ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड लैंग्वेजेज़, जेएमआई ने प्रेमचंद के जामिया के साथ करीबी रिश्ते के बारे में भी बात की, जिन्होंने जामिया को हिंदुस्तान का महान सेक्युलर इंस्टीट्यूशन बताया। प्रो. कौसर मज़हरी, अध्यक्ष, उर्दू विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया ने सलाह दी कि आर्काइव्ज़ में अलग-अलग भाषाओं की सभी किताबों को एक जगह इकट्ठा करने की ज़रूरत है ताकि स्कॉलर्स और स्टूडेंट्स आसानी से उन्हें देख सकें। प्रो. नीरज कुमार, हेड, हिंदी विभाग, जेएमआई ने भी प्रेमचंद की साहित्यिक सुंदरता और हिंदी और उर्दू दोनों के लिए उनके योगदान पर रोशनी डाली।

इस मौके पर, आर्काइव्ज़ के डायरेक्टर प्रो. शहज़ाद अंजुम ने इवेंट की शुरुआत माननीय वाइस चांसलर प्रो. आसिफ़ को धन्यवाद देते हुए की कि वे आर्काइव्ज़ में ऐसी एकेडमिक एक्टिविटीज़ को

सपोर्ट और संरक्षण देने के लिए इतने उदार हैं, जिससे स्कॉलर्स, स्टूडेंट्स और फैकल्टी मेंबर्स के बीच बहस और चर्चा का लेवल बढ़ता है। उन्होंने प्रो. सगीर अफ़राहीम को भी धन्यवाद दिया कि उन्होंने सत्र की अध्यक्षता करने और उर्दू/ हिंदी के आइकॉनिक राइटर मुंशी प्रेमचंद पर अपनी एक्सपर्टीज़ से स्टूडेंट्स को अवगत कराने के लिए उनका इनविटेशन स्वीकार किया। उन्होंने डॉ. मुश्ताक अहमद गनई, नाज़िम, इकबाल इंस्टीट्यूट, कश्मीर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर को भी धन्यवाद दिया, जो व्याख्यान के दौरान इस मौके पर मौजूद थे।

कार्यक्रम की समन्वयक सुश्री श्रद्धा शंकर ने मुंशी प्रेमचंद और स्मृति व्याख्यान की थीम का इंट्रोडक्शन दिया। इवेंट का समापन JPALC JMI की आर्काइविस्ट सुश्री स्निग्धा रॉय के फॉर्मल वोट ऑफ़ थैंक्स के साथ हुआ, जिन्होंने इस मौके पर मौजूद सभी पार्टिसिपेंट्स को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में प्रेमचंद आर्काइव्स एंड लिटरेरी सेंटर के मेन हॉल में स्टूडेंट्स, रिसर्चर्स और टीचर्स बड़ी संख्या में शामिल हुए।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी